6. उपकार का बदला

सोमन एक गरीब आदमी था। वह बूढ़ा हो गया था। अपने गुज़ारे के लिए वह कुछ-कुछ धंधे किया करता था। गर्मी के महीने में वह ताड़ के पंखों को बेचकर अपने परिवार का भरण-पोषण करता था।

गर्मी के महीने में पूरे दिन कचहरी, बाज़ार और मुहल्लों में घूम-घूमकर पंखे बेचता था। लेकिन दोपहर को जब सारे लोग आराम करने लगते थे तो उस समय उसके पंखे नहीं बिकते थे। उस समय वह एक पेड़ के नीचे विश्राम करता था। दोपहर ढलने के बाद, गर्मी कम होने पर वह फिर से पंखे बेचने चला जाता था।

दोपहर में जब वह विश्राम करने आता था तो बिके हुए पंखों के पैसे में से कुछ पैसे निकाल लेता था। उन्हीं पैसों से बाज़ार से खाने का सामान खरीद कर लाता और खा लेता। कभी मुरही तो कभी फुटहा, कभी कचड़ी तो कभी गुलगुला खरीद लेता।

एक दिन दोपहर के समय सोमन पेड़ के नीचे बैठा था। नाश्ते की पोटली खोलने की जुगत कर रहा था। उस पेड़ से हटकर कुछ दूरी पर एक पुराना बगीचा था जिसमें बंदरों का बसेरा था। उनमें से एक मोटा-सा बंदर पेड़ से थोड़ी दूरी पर आ कर बैठ गया। वह बंदर शायद भूखा था। वह सोमन की तरफ टुकुर-टुकुर देखने लगा। सोमन को उस पर दया आ गई और उसने दो गुलगुले उसकी तरफ फेंके। बंदर ने लपककर गुलगुलों को उठाया और खा लिया।

अब रोज़ दोपहर को सोमन बंदर को खाने के लिए कुछ न कुछ देता। एक दिन सोमन आया, लेकिन आज उसका दिल छोटा था। उसका एक भी पंखा आज नहीं बिका था। पैसे पास में थे नहीं, इसलिए वह खाने के लिए कुछ खरीद भी नहीं सका। बाकी दिनों की भाँति वह बंदर फिर से उसके पास आकर बैठ गया। सोमन चापाकल पर जाकर केवल पानी पीकर पेड़ के नीचे आकर लेट गया। बंदर उसकी तरफ टुकुर-टुकुर देखता रहा।

सोमन लेटे हुए ही बंदर की ओर देखकर बोला—"हे हनुमान जी। आज तो एक भी पंखा नहीं बिका इसलिए खाने के लिए कुछ लाया नहीं। तुम्हें क्या दूँ? आज तुम भी संतोष करो।"

बंदर उसी तरह देखता रहा, जैसे कहता हो—क्या करोगे? ऐसा ही होता है।

सोमन को तो भूख लगी थी। लेकिन वह करता क्या? आँख बंद कर मन मारकर लेट गया। सिरहाने में पंखे की गठरी रखी थी। बंदर भी थोड़ी दूरी पर वैसे ही बैठा था।

अचानक बंदर उठा। छलाँग मारकर पंखे की गठरी के पास पहुँच गया। जब तक सोमन हड़बड़ाते हुए उठकर बैठा, तब तक बंदर दो पंखों को खींच लिया। सोमन, 'अरे ! अरे !' करता रह गया और बंदर एक हाथ में पंखा लेकर तीन पैरों पर फांदते हुए चल दिया। सोमन असहाय-सा उसे देखता रहा।

सोमन ने उसे थोड़ी दूर पर सड़क के किनारे एक डेरे की ओर जाते हुए देखा। बंदर का पीछा करना उसके वश की बात नहीं थी।

सोमन दुखी हो गया। मन ही मन सोचने लगा, 'आह ! एक तो आज पंखा नहीं बिका और उस पर से यह बंदर दो पंखे भी लेकर चला गया। अब इसका भी घाटा मुझको सहना होगा।' वह सोच में डूब गया।

कुछ समय बीता होगा। वह बंदर पंखा लेकर जिधर गया था, उधर से ही आता दीख पड़ा। वह तीन पैरों पर फाँदते हुए आ रहा था। उसके हाथ में एक बहुत बड़ा अधपका पपीता था—आधा पीला और आधा हरा। बंदर सोमन से कुछ दूर हट कर खड़ा हो गया और पपीते को सोमन की ओर लुढ़का दिया।

तब तक सोमन की आँख लग गई थी। बंदर सोमन को निश्चिंत देख एक बार

गुर्राया। इस पर सोमन की आँखें खुल गईं। वह उठते हुए बोला, "अरे हनुमान जी। ये कहाँ से तुम ले आए?"

सोमन ने एक बार बंदर को देखा, फिर पपीते को देखा। लेकिन उसने पपीते को छुआ नहीं। बंदर कुछ देर तक वैसे ही बैठा रहा। फिर सोमन पर खोंखियाते हुए दौड़ा। सोमन डर गया। बंदर खोंखियाते हुआ आया और उसने पपीते को सोमन के और नजदीक लुढ़का दिया। फिर वह अपनी जगह पर जाकर बैठ गया और सोमन की ओर देखने लगा।

सोमन डरते हुए पपीते को उठा लिया। सोमन को पपीता उठाते देख बंदर आश्वस्त हो गया। बंदर को शांत देख सोमन ने अपने कमर से चाकू निकाला, पपीते का छिलका हटाया और उसके चार टुकड़े किए। एक-डेढ़ टुकड़ा बंदर की ओर फेंक दिया। सोमन बाकी पपीते को खाने लगा। पपीता इतना वड़ा था कि उसका पेट भर गया।

सोमन ने सोचा 'चलो, बंदर दो पंखे ले गया तो मेरा पेट भी भर गया। समझूँगा पंखा का दाम मुझे मिल गया।' धूप ढलने पर सोमन पंखे बेचने चल पड़ा।

आगे सड़क के किनारे एक वहुत वड़ा डेरा था। उधर से जाते हुए अन्य दिनों की भाँति हाँक लगाई–पंखा ले लो, पंखा !

'ओ पंखेवाले!', डेरे से किसी ने पुकारा ।

सोमन फाटक खोल डेरे के अंदर गया। वहाँ एक भद्र पुरुष खड़े थे। उन्होंने सोमन को बरामदे पर फेंके हुए पंखों को दिखाते हुए पूछा, "ये दोनों पंखे तुम्हारे हैं?"

"जी सरकार!"

''ये पंखे एक बंदर फेंक गया था। ले जाओ अपने पंखे''।

सोमन ने चारो तरफ देखा। एक तरफ पपीते के तीन-चार पेड़ और उस पर ढेर सारे अधपके पपीते लटके हुए थे। सोमन ने पूछा–"सरकार ! क्या बंदर ने आपका पपीता भी तोड़ा है।"

भद्रपुरुष थोड़ा चकित होते हुए बोले–"हाँ ! हाँ ! पंखों को यहीं फेंक वह एक पपीता तोड़ ले गया था।"

सोमन बोला–"सरकार तब यह पंखा मैं नहीं लूँगा।"

"क्यों ?"

"सरकार, वह बंदर पंखे के बदले में मुझे पपीता दे गया था। इसे आप रख लीजिए। मुझे इसका दाम मिल गया है।"

भद्रपुरुष को बंदर के इस कारनामे और पंखेवाले के उत्तर पर बड़ा आश्चर्य हुआ। सोमन ने पूरी घटना उन्हें बतायी।

भद्रपुरुष को इससे और अधिक आश्चर्य हुआ। वे बोले, "पंखेवाले, जब बंदर जैसे जंगली-जंतु में इतना विवेक है, तब मैं तो मनुष्य हूँ। तुम्हारा पंखा मैं कैसे लूँगा? तुम पंखों को छोड़ दो। इनका कितना दाम होगा यह बताओ।"

सोमन सकुचाते हुए बोला–"सरकार, यह बिकता तो है चार रुपए जोड़ा। लेकिन आप जो भी दे देंगे, वह मेरे लिए बहुत होगा।"

भद्रपुरुष ने जेब से पाँच रुपये का एक सिक्का निकाला और सोमन को दे दिया। सोमन पैसे लेकर चल पड़ा, सड़क की ओर। सड़क पर आकर उसने फिर से हाँक लगाई–'पंखा ले लो, पंखा !'

–रामदेव झा

अभ्यास

पाठ में से

1. कहानी में जो-जो हुआ उनके सामने ✓ का निशान लगाइए –

(क) सोमन ताड़ के पंखे बेचता था। ☐

(ख) सोमन ने वंदर के बच्चे को गुलगुला दिया। ☐

(ग) वंदर सोमन के दो पंखे लेकर चला गया। ☐

(घ) वंदर सोमन के लिए पपीता लाया था। ☐

(ङ) बंदर पैसे के बदले पपीता लाया था। ☐

(च) सोमन छह रुपए जोड़े पंखे बेचता था। ☐

2. सोमन गुज़ारे के लिए क्या करता था?
3. सोमन को वंदर पर दया क्यों आ गई?
4. बंदर किसके बदले में पपीता लाया था?
5. भद्रपुरुष ने सोमन को दो पंखों के बदले कितने पैसे दिए ?

बातचीत के लिए

1. सोमन अपने पंखे बेचने के लिए कैसे आवाज़ लगाता था? आप पंखों को बेचने के लिए कैसे आवाज़ लगाएँगे?
2. सामान बेचने वाले अपने सामान बेचने के लिए आवाज़ क्यों लगाते हैं?
3. अगर आपको ये सामान बेचने पड़े तो आप कैसे आवाज़ लगाएँगे –

- मखाना
- मछली
- सब्जी
- आम
- चाय
- बरतन
- चप्पल
- आईसक्रीम
- मूँगफली

4. वंदर ने सोमन की क्या सहायता की और कैसे?
5. क्या सोमन ने बंदर को अपने साथ रखा था?
6. आज ताड़ के पंखे का दाम क्या है?

क्या होता

1. अगर सोमन ने बंदर को खाने का सामान न दिया होता?
2. अगर भद्रपुरुष बंदर को पपीता न लेने देता?

खोजबीन

कहानी में से उन अंशों को खोजिए जिनसे पता चलता है कि

1. सोमन और बंदर एक-दूसरे के मन की बात समझते हैं।
2. सोमन बहुत दयालु है।
3. गर्मी के मौसम की बात है।
4. भद्रपुरुष भला आदमी था।

समझ की बात

1. दोपहर को सोमन के पंखे क्यों नहीं बिकते थे?
2. मुरही, फुटहा, कचड़ी और गुलगुला कैसे बनते हैं?
3. बंदर सोमन पर क्यों गुर्राया था?

आपकी भाषा में

1. **आप अपनी मातृभाषा में नीचे लिखे शब्दों एवं वाक्यों को कैसे कहेंगे ?**
   - गुलगुला, गठरी, पपीता, कारनामा, छह रुपए जोड़ा
   - 'सरकार! तब यह पंखा मैं नहीं लूँगा।'
   - 'पंखा ले लो, पंखा!'
   - 'ये कहाँ से ले आए तुम?'
2. **इस कहानी को अपनी मातृभाषा में सुनाइए।**

भाषा के रंग

1. 'वह सोमन की तरफ **टुकुर-टुकुर** देखने लगा।' इस वाक्य में टुकुर-टुकुर देखने का क्या मतलब है?
   देखने के इन तरीकों में क्या अंतर है? इनका मतलब समझाने के लिए इन

शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए –

घूरना	**अपलक देखना**	**टेढ़ी नज़र से देखना**
निहारना	**टकटकी लगाना**	**आँखें फाड़कर देखना**

2. नीचे दिए गए वाक्यों के रेखांकित शब्दों के बदले ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्यों को दुबारा लिखिए कि उनका मतलब न बदले –

(क) वह दोपहर को **विश्राम** करता था।

(ख) वह ताड़ के पंखे बेचकर अपने परिवार का **भरण-पोषण** करता था।

(ग) आज तुम भी **संतोष** करो।

(घ) सोमन **सकुचाते** हुए बोला।

---

3. नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़िए –

* इस **पर** सोमन की **आँखें खुल गईं।**

* सारी बात जानकर सोमन की **आँखें खुल गईं।**

दोनों वाक्यों में **आँखें खुल गईं** के अर्थ में अंतर है।

पहले वाक्य में **आँखें खुल गईं** का मतलब जागने से है जबकि दूसरे वाक्य में **आँखें खुल गईं** का मतलब सच्चाई का पता लगने से है। दूसरे वाक्य में **आँखें खुल गईं** एक मुहावरा है।

नीचे दिए गए मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करते हुए उनके मतलब बताइए–
आँखें लगना, आँखों पर पर्दा पड़ना, आँखें फैलना, आँखें चुराना, आँखें दिखाना, आँखों की किरकिरी होना।

4. **नीचे दिए गए वाक्यों में मोटे अक्षरों में लिखे सर्वनाम किसके लिए आए हैं, लिखिए –**

वाक्य	किसके लिए
(क) लेकिन **वह** करता क्या?	----------
(ख) लेकिन **उसने** पपीते को छुआ नहीं।	----------
(ग) तब **मैं** तो मनुष्य हूँ।	----------
(घ) **ये** दोनों पंखे तुम्हारे हैं?	----------

आपकी कल्पना

1. 'उपकार का बदला' शीर्षक कहानी की किसी एक घटना को संवाद के रूप में लिखिए।

2. अपने दोस्त को सोमन और बंदर के बारे में बताते हुए एक पत्र लिखिए।